उपसंहार

राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का अभिन्न घटक है । राग की रचना को समझने के लिए रागांग का विश्लेषण आवश्यक है, ऐसा शोधार्थी का मत है । इसी को ध्यान मे रखते हुए शोधार्थीने यह शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है । इस शोध प्रबंध के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा राग, रागांग, रागांग भैरव और रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है ।

इस अध्याय मे सर्वप्रथम शोध प्रबंध के अध्यायों से प्राप्त महत्त्वपूर्ण तथ्यो की चर्चा एवं शोध प्रक्रिया का विवरण दिया है । इसके पश्चात संपूर्ण शोध प्रबंध से प्राप्त कुछ महत्त्वपूर्ण विषयो व तथ्यों को इस अध्याय के अंत मे शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया है ।

१. अध्याय-१ : राग - परिभाषाओ का अध्ययन

इस अध्याय मे "राग" की उत्पति, ऐतिहासिक विवरण, परिभाषाए एवं महत्व इन पर विभिन्न विद्वानो के विचारो का विवरण देते हुए राग के संबंध मे कुछ नवीन विचारो को प्रस्तुत किया गया है ।

राग का स्त्रोत जाति गायन को माना गया है, ऐसा विद्वानो के मतो के आधार पर सिद्ध हुआ है । शोधार्थी का मत है कि वृहद्देशी ग्रंथ मे प्राप्त राग की परिभाषा व्यापक है तथा वर्तमना परिपेक्ष मे भी राग तत्व को स्पष्ट करने मे समर्थ है ।

इस अध्याय मे शोधार्थी ने पंडित रातंजनकर एवं पंडित के.जी.गिंडे जैसे विद्वानो के "राग" के संबंध में विचारो को प्रस्तुत किया है । इसके अलावा कई भारतीय, पाश्चात्य एवं वर्तमान युग के कुछ संगीत विद्वान एवं कलाकारो के द्वारा प्रस्तुत की गई राग की परिभाषाओं को इस अध्याय मे संकलित किया गया है । इन सभी प्राचीन एवं आधुनिक परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष रूप मे शोधार्थी द्वारा कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों को

प्रस्तुत किया है । शोधार्थी का मत है कि "राग" को किसी परिभाषा मे सिमीत करना अत्यंत कठिन है । "राग" को समझना यह एक आजीवन प्रक्रिया है और हर एक व्यक्ति को अलग अलग अनुभव प्रदान करने का अपार सामर्थ्य "राग" मे समाहित है ।

२. अध्याय-२ : राग वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियाँ एवं रागांग पद्धति का अध्ययन

इस अध्याय मे मुख्य रूप से राग वर्गीकरण की विभिन्न पद्धतियों का विचार करते हुए रागांग पद्धति पर विस्तृत विवेचन शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया है । रागो का वर्गीकरण प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न पद्धतियों के द्वारा किया गया है । शोधार्थी द्वारा प्राचीनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल की प्रचलित राग वर्गीकरण की पद्धतियों का विवरण इस अध्याय मे प्रस्तुत किया है । हर एक पद्धति महत्त्वपूर्ण है और रागो की विकास यात्रा मे हर एक पद्धति का महत्त्वपूर्ण योगदान है, ऐसा शोधार्थी का मत है । प्राचीन काल मे प्राप्त र ाग स्वरूप और वर्तमान समय के रागो के स्वरूपो मे कई मतांतर पाए जाते है । संगीत के विद्वानोने कालानुसार प्राप्त रागो के स्वरूपो के आधार पर रागो का वर्गीकरण किया है, ऐसा शोधार्थी का मत है ।

आधुनिक काल की राग वर्गीकरण पद्धतियों मे थाट पद्धति और रागांग पद्धति का प्रचार प्रसार अधिक है । इस शोध प्रबंध का मुख्य विषय रागांग भैरव व रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन होने के कारण शोधार्थी द्वारा राग वर्गीकरण की रागांग पद्धति पर विस्तृत विवेचन इस अध्याय मे प्रस्तुत किया है ।

रागांग पद्धति को अधिकतर विद्वानोने महत्त्वपूर्ण माना है । विद्वानो का यह मत रहा है कि राग को समझने के लिए राग के मुख्य अंग "रागांग" को आत्मसात करना आवश्यक है । शोधार्थी भी इस मत से पूर्णतया सहमत है ।

रागांग पद्धति के महत्त्व को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करते हुए शोधार्थी द्वारा पंडित नारायण मोरेश्वर खरे, पंडित राजोपाध्ये, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित के. जी.

गिन्डे, पंडित यशवंत म्हाले एवं डॉ. अलका देव मारूलकर इन विद्वानो के मतो का उल्लेख किया है ।

शोधार्थी द्वारा राग वर्गीकरण की थाट पद्धति व रागांग पद्धति का संबंध भी स्थापित करने का प्रयास इस अध्याय मे किया है । कुछ विद्वानो का यह मत है कि थाट पद्धति के अंतर्गत रागांग का विचार भी किया गया है । इस मत से शोधार्थी भी सहमत है । संगीत शिक्षा की कठिन प्रक्रिया मे रागांग पद्धति का अवलंबन अत्यंत सहायक हो सकता है ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

३. अध्याय-३ : रागांग भैरव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

इस अध्याय मे शोध प्रबंध के मुख्य विषय को शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत किया है । रागांग भैरव के विश्लेषणात्मक अध्ययन की शोध प्रक्रिया एवं प्राप्त महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नरूप से है :-

१. इस अध्याय मे सर्वप्रथम शोधार्थी ने राग भैरव का ऐतिहासिक विवरण, महत्त्व एवं परिचय प्रस्तुत किया है । भैरव यह प्राचीन राग है और भगवान शंकर के साथ इस राग का संबंध माना गया है । भैरव का उल्लेख राग वर्गीकरण की राग रागिनी पद्धति मे भी किया गया है । राग भैरव के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए तानसेन की रचना एवं दोहो का उल्लेख शोधार्थी द्वारा किया गया है ।
२. भैरव थाट एवं भैरव राग का श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् ग्रंथ मे प्राप्त विवरण को इस अध्याय मे प्रस्तुत किया गया है ।
३. शोधार्थी द्वारा इस अध्याय मे राग भैरव के संबंध मे विभिन्न विद्वानो के मत, विभिन्न विद्वानो के अनुसार राग भैरव का स्वर विस्तार तथा इन स्वर विस्तारो का विश्लेषण तथा इन स्वर विस्तारो से प्राप्त भैरव रागांग वाचक स्वर संगतियो को प्रस्तुत किया है ।
४. इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा कुछ बंदिशो का विश्लेषण किया गया है । इस

विश्लेषण के आधार पर रागांग वाचक स्वर संगतियो को खोजकर प्रस्तुत किया गया है ।

५. राग भैरव के विभिन्न स्वर विस्तारो एवं बंदिशो के विश्लेषण से रागांग वाचक स्वर संगतियों की प्राप्ती हुई । जो निम्न प्रकार से है ।

– पूर्वांग में ग म रे सां और उत्तरांग में ग म ध ध प यह स्वर संगतियाँ भैरव की मुख्य रागांग वाचक स्वर संगतियाँ है ।

अन्य महत्वपूर्ण संगतियाँ :–

(१) सा रे सा (२) ध़ सा (३) नि़ ध़ नि़ सा (४) नि़ सा ग म (५) सा, म ग (६) ग म प (७) म प (८) म प, ग (९) प म ग (१०) सा ग म प (११) नि ध प (१२) ध ध प म प (१३) नि सां ध प (१४) ध सां (१५) नि सां (१६) ध नि सां रें रें सां

राग की रचना मे रागांग का महत्त्व भी इससे सिद्ध हुआ ऐसा शोधार्थी का मत है।

६. राग भैरव की रागांग वाचक स्वर संगतियो का अन्य रागो से संबंध खोजने की दृष्टि से निम्न रागो जैसे – रामकली, गुणक्री, अहिर भैरव, शिवमत भैरव, बंगाल भैरव, आनंद भैरव, प्रभात भैरव, सौराष्ट्र भैरव, नट भैरव, विभास, भैरव बहार, कालिंगडा, गौरी(भैरव थाट), बसंत मुखारी एवं बैरागी इन सभी रागो का ग्रंथो मे उल्लेख, विद्वानो के मत, स्वर विस्तार एवं बंदिशो के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ।

इस विश्लेषण के आधार पर अन्य रागो मे भैरव रागांग का पूर्वांग और उत्तरांग मे प्रयोग निम्नरुप से है :–

रामकली :– पूर्वांग मे ग म रे सा और उत्तरांग मे ध प परन्तू ऋषभ, धैवत भैरव के समान आंदोलित नही होते ।

अहिर भैरव : पूर्वांग मे ग म रे सा

नट भैरव : उत्तरामग मे ग म ध प

बसंत मुखारी: पूर्वांग मे ग म रे सा

प्रभात भैरव: पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे रागांग भैरव का प्रयोग

बंगाल भैरव : पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे रागांग भैरव का प्रयोग

शिवमत भैरव: पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे रागांग भैरव का प्रयोग

गुणक्री : पूर्वांग मे म रे सा की मींड गंधार का स्पर्श करते हुए और उत्तरांग मे धैवत का प्रयोग

आनंद भैरव: आगरा घराने की परम्परा के अनुसार इसमे दोनो धैवत एवं कोमल ऋषभ का प्रयोग किया जाता है । भैरव रागांग का पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे प्रयोग।

सौरष्ट्र भैरव : पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे भैरव रागांग का प्रयोग

विभास : भैरव रागांग का सीधा प्रयोग नही होता है, परन्तू सूक्ष्म रुप से ध ध प और ग रे सा इन स्वर संगतियो से भैरव के साथ आंशिक संबंध स्थापित कर सकते है । इसमे ऋषभ व धैवत आंदोलित नही होते है ।

भैरव बहार: पूर्वांग मे भैरव रागांग का प्रयोग ।

कालिंगडा: भैरव थाट के स्वर होते हुए भी चलन मेद और स्वर लगाव मेद के कारण भैरव रागांग का प्रयोग नही होता है ।

जोगिया : उत्तरांग मे भैरव रागांग वाचक स्वर संगतियों का प्रयोग किया जाता है । परन्तू पूर्वांग मे म रे की मिंड मे गंधार का स्पर्श नहीं किया जाता है । गुणक्री की तुलना मे भैरव रागांग का स्पष्ट प्रयोग जोगिया मे नहीं है ।

गौरी (भैरव थाट): भैरव रागांग का स्पष्ट प्रयोग नही होता है, स्वर लगाव मे कालिंगडा अंग का प्रयोग होता है ।

बैरागी : भैरव रागांग का सीधा प्रयोग नही होता है । म रे की मिंड मे भैरव का आंशिक रूप से आभास होता है

७. रागो के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि कई रागो मे भैरव रागांग का प्रयोग स्पष्ट रूप से होता है । कुछ राग ऐसे है, जिनमे भैरव रागांग का प्रयोग केवल उत्तरांग या केवल पूर्वांग मे ही किया जाता है । कुछ रागो मे भैरव रागांग का प्रयोग नही है परन्तु ऋषभ व धैवत कोमल प्रयुक्त होने के कारण वह भैरव थाट से संबंधित है । शोधार्थी द्वारा उपरोक्त उल्लेखित किए गए रागो मे भैरव रागांग का प्रयोग किस प्रकार होता है, यह इस अध्याय मे प्रस्तुत किया गया है ।

८. इस अध्याय के निष्कर्ष के रूप मे रागांग प्रयोग के आधार पर भैरव रागांग के अंतर्गत रागो का वर्गीकरण नवीन रूप से करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है । यह वर्गीकरण निम्न रूप से है :

<u>रागांग आधारित पूर्वांग, उत्तरांग राग वर्गीकरण :</u>

भैरव रागांग का पूर्वांग व उत्तरांग मे प्रयोग होने वाले रागो की सूचि :

१) रामकली २) बंगाल भैरव ३) शिवमत भैरव

४) गुणक्री ५) आनंद भैरव ६) सौराष्ट्र भैरव

भैरव रागांग का केवल पूर्वांग मे प्रयोग होने वाले रागो की सूचि :

१) अहिर भैरव २) बसंत मुखारी ३) भैरव बहार

भैरव रागांग का केवल उत्तरांग मे प्रयोग होने वाले रागो की सूचि :

१) नटभैरव २) जोगिया

भैरव थाट के राग होते हुए भी भैरव रागांग का प्रयोग न होने वाले रागो की सूचि

१) बिभास २) कालिंगडा ३) गौरी

४) बैरागी

४.　　अध्याय- ४ : रागांग पूर्वी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

इस अध्याय मे शोध प्रबंध के मुख्य विषय को शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत किया है । रागांग पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन की शोध प्रक्रिया एवं प्राप्त महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नरूप से है :-

१. शोधार्थी द्वारा सर्वप्रथम पूर्वी राग का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया गया है । "सद्राग चंद्रोदय" ग्रंथ मे प्राप्त पूर्वी राग के उल्लेख से आधुनिक काल तक पूर्वी राग के स्वरूप के परिवर्तनो का उल्लेख विभिन्न ग्रंथो के आधार पर शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

२. श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् मे प्राप्त पूर्वी राग का विवरण और उसका संक्षिप्त अर्थ शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है । पूर्वी राग से संबंधित विद्वानो के द्वारा दिए गए विभिन्न मतो का उल्लेख शोधार्थी द्वारा इस अध्याय मे किया गया है ।

३. पूर्वी राग के स्वर विस्तार तथा बंदिशो के विश्लेषणात्मक अध्ययन से पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों को खोजकर शोधार्थी द्वारा इस अध्याय मे प्रस्तुत किया गया है । जो निम्न रूप से है :

पूर्वी राग के पूर्वांग मे प्रयोग की जानेवाली रागांग वाचक स्वर संगतियाँ

१) ऩि सा रे॒ ग

२) रे॒ ग म॑ ग म रे॒ग

३) ऩि रे॒ ग

४) ऩि रे॒ ग म॑ प

पूर्वी राग के उत्तरांग मे प्रयोग की जानेवाली रागांग वाचक स्वर संगतियाँ :

१) ध॒ म॑ ग

२) रें॒ नि ध॒ प

३) ध॒ नि ध॒ प

४) म॑ ध॒ सां

४. पूर्वी रागांग वाचक स्वर संगतियों का अन्य रागो से संबंध खोजने की दृष्टि से निम्न रागो जैसे - पूरिया धनाश्री, श्री, बसंत, परज, मालवी, रेवा, त्रिवेणी, जैताश्री, टंकी विभास एवं गौरी (पूर्वी थाट) इन सभी रागो का ग्रंथो मे उल्लेख, विद्वानो के मत, स्वर विस्तार एवं बंदिशो के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ।

इस विश्लेषण के आधार पर अन्य रागो मे पूर्वी रागांग का राग के पूर्वांग व उत्तरांग मे प्रयोग निम्न रूप से है :

१) परज :- पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे प्रयोग, लगावभेद और चलन भेद के साथ

२) पूरिया धनाश्री :- पूर्वांग व उत्तरांग दोनो मे प्रयोग

३) श्री :- श्री अंग की प्रबलता के साथ उत्तरांग मे अधिक प्रयोग

४) बसंत :- उत्तरांग मे प्रयोग

५) गौरी :- गौरी अंग की प्रबलता के साथ उत्तरांग मे अधिक प्रयोग

६) जैताश्री :- जैत और श्री अंग के साथ पूर्वांग व उत्तरांग मे प्रयोग

७) त्रिवेणी :- श्री और जैत की प्रबलता के साथ पूर्वांग व उत्तरांग मे सूक्ष्म प्रयोग

८) रेवा :- श्री अंग की प्रबलता के साथ उत्तरांग मे ध प इस स्वर संगति का पूर्वी रागांग से सूक्ष्म संबंध

९) मालवी :- श्री अंग की प्रबलता के साथ उत्तरांग मे सूक्ष्म प्रयोग

१०) विभास :- उत्तरांग मे प्रयोग

११) टंकी :- श्री अंग कीप्रबलता के साथ उत्तरांग मे सूक्ष्म प्रयोग

५. रागो के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि कई रागो मे पूर्वी रागांग का प्रयोग स्पष्ट रूप से होता है । कुछ राग ऐसे है जिनमे पूर्वी रागांग का केवल उत्तरांग मे प्रयोग होता है । पूर्वी थाट के कुछ राग ऐसे है जिनमे पूर्वी रागांग का सूक्ष्म प्रयोग दिखाई देता है । शोधार्थी द्वारा उपरोक्त उल्लेखित किए गए रागो मे

पूर्वी रागांग का प्रयोग किस प्रकार होता है, यह इस अध्याय मे किया गया है ।

६. इस अध्याय के निष्कर्ष के रूप मे रागांग प्रयोग के आधार पर पूर्वी रागांग के अंतर्गत रागो का वर्गीकरण नवीन रूप से करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है । यह वर्गीकरण निम्न रूप से है :

<u>रागांग आधारित पूर्वांग, उत्तरांग राग वर्गीकरण</u>

पूर्वी रागांग का पूर्वांग व उत्तरांग मे प्रयोग होने वाले रागो की सूची :

१. परज २. पूरिया धनाश्री ३. जैताश्री

पूर्वी रागांग का केवल उत्तरांग मे प्रयोग होनेवाले रागो की सूची :

१. श्री २. बसंत ३. गौरी

४. विभास

पूर्वी थाट के राग एवं रागांग पूर्वी का सूक्ष्म प्रयोग होनेवाले रागो की सूची :

१. त्रिवेणी २. रेवा ३. मालवी

४. टंकी

५. अध्याय-५ : रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी का तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा निम्न बिंदूओ के आधार पर रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी की तुलना प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

१. स्वर साम्यता एवं विभिन्नता

२. प्रस्तुतिकरण एवं रागांग

३. रागो की समानता एवं विभिन्नता

४. कर्णाटकी मेल पद्धति एवं थाट पद्धति

६.   अध्याय- ६ : उपसंहार

इस अध्याय मे शोधार्थीने इस शोध प्रबंध के सभी अध्यायो का सार रूप में वर्णन किया है । शोध प्रक्रिया से प्राप्त महत्त्वपूर्ण तथ्यो का वर्णन इस अध्याय मे किया गया है । साथ ही संभावित शोध विषयो का उल्लेख भी इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

इस शोध प्रबंध से प्राप्त तथ्यो के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि राग को समझने के लिए "रागांग" को समझना आवश्यक है । सूक्ष्म रूप से देखने पर राग भैरव और राग पूर्वी मे समान स्वर है । राग भैरव की सायंकालीन प्रतिकृति राग पूर्वी को माना जा सकता है । इसलिए इन दोनो रागांगो का चयन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध मे किया है ।

इस शोध प्रक्रिया से मध्यम स्वर का प्रयोग और राग के गायन समय मे सीधा संबंध दिखाई दिया, जो अध्वदर्शक स्वर "मध्यम" का महत्त्व स्पष्ट करता है । प्रातःकालिन राग मे शुद्ध मध्यम का प्रयोग और सायंकालिन रागो मे तीव्र मध्यम का बहुत्व दिखाई देता है । भैरव और पूर्वी मे, भैरव मे शुद्ध मध्यम का मुक्त प्रयोग किया जाता है । यही शुद्ध मध्यम पूर्वी मे अल्पत्व धारण कर लेता है । साथ ही तीव्र मध्यम प्रबल हो जाता है । भैरव एवं पूर्वी की रागांग वाचक स्वर संगतियों से स्पष्ट हुआ है ।

रागांग वाचक स्वर संगतियों मे स्वर लगाव का महत्त्व भी इस शोध प्रबंध के द्वारा स्पष्ट हुआ है । गंधार पर ऋषभ का कण सायंगेयत्व प्रदर्शित करता है और कण प्रयोग नहोने पर प्रातः गेयत्व प्रदर्शित करता है । पूर्वी मे $^{\text{रे}}$ग इस प्रकार ऋषभ का कण ग म $^{\text{रे}}$ग इस स्वर संगति मे प्रयोग किया जाता है । राग परज मे यह कण प्रयोग नही किया जाता । ऐसे अन्य कई स्वर लगाव का उल्लेख इस शोध प्रबंध मे किया गया है ।

इस शोध प्रबंध का विषय राग का विश्लेषण न होते हुए रागांग भैरव एवं पूर्वी का विश्लेषण है । रागांग का विश्लेषण करने के हेतू से विभिन्न स्वर विस्तारो एवं बंदिशो का चयन शोधार्थी द्वारा किया गया है । विद्वानो द्वारा लिखित स्वर विस्तारो मे रागांग का प्रयोग किस प्रकार हुआ है, यह स्वर विस्तार के विश्लेषण के द्वारा शोधार्थी ने स्पष्ट करने का

प्रयास किया है । बंदिश के महत्त्व को अधिकतर विद्वानो ने माना है । विद्वानो द्वारा रचित बंदिशो एवं पारंपरिक बंदिशो से राग का चलन स्पष्ट होता है यह मत सर्वमान्य है । रागांग के विश्लेषण के हेतू से बंदिश की स्वर लिपि का अध्ययन एवं विश्लेषण इस शोध प्रबंध मे शोधार्थी द्वारा किया गया है । बंदिशो मे रागांग वाचक स्वर संगतियो का प्रयोग स्पष्ट रूप से दिखाई दिया । अलग अलग बंदिशो के विश्लेषण से रागांग वाचक स्वर संगतियो का प्रयोग अधिक स्पष्ट हुआ है । बंदिशो से प्राप्त रागांग वाचक स्वर संगतियाँ राग के चलन को समझने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जो इस शोध प्रबंध के द्वारा स्पष्ट होता है ।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी द्वारा रचित थाट पद्धति मे भी रागांग का विचार किया गया है यह इस शोध प्रबंध से सिद्ध होता है । थाट पद्धति मे राग का वर्गीकरण करते समय स्वर साम्यता स्वरूप और रागांग इन तीनो का विचार किया गया है । जिसका उल्लेख इस शोध प्रबंध मे शोधार्थी द्वारा किया गया है ।

रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी के विश्लेषणात्मक अध्ययन की प्रक्रिया से रागांग प्रयोग के संबंध में कुछ तथ्य उजागर हुए है । कई राग ऐसे है जिनमे राग के पूर्वांग और उत्तरांग दोनो मे रागांग वाचक स्वर संगतियो का प्रयोग है । कई रागो मे केवल पूर्वांग या केवल उत्तरांग मे रागांग का प्रयोग है । कई रागो मे रागांग का सीधा प्रयोग नही है ; परन्तु सूक्ष्म संबंध दिखाई देता है । इन सभी तथ्यों को ध्यान मे रखते हुए शोधार्थीने रागांग भैरव एवं रागांग पूर्वी के अंतर्गत इस शोध प्रबंध मे उल्लेखित रागो का नवीनतम वर्गीकरण तीसरे एवं चतुर्थ अध्याय के निष्कर्ष केरूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । इस वर्गीकरण का नामकरण शोधार्थी ने “रागांग आधारित पूर्वांग उत्तरांग राग वर्गीकरण” किया है ।

भविष्य मे सभी रागांगो के विश्लेषणात्मक अध्ययन से इसको पूर्णरूप प्राप्त हो सकता है, ऐसा शोधार्थी का मत है । यह वर्गीकरण विद्यार्थी को रागांग प्रयोग समझने मे सहायक हो सकता है ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

शोधार्थी के मतानुसार इस शोध प्रबंध के आधार पर भविष्य मे निम्न विषयो पर शोध कार्य की कई संभावनाएँ दिखाई देती है ।

- थाट पद्धति और रागांग पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन
- अन्य रागांग जैसे काफी, मल्हार, सारंग आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन
- बंदिशो की स्वरलिपि मे रागांग वाचक स्वर संगतियो का महत्त्व
- कलाकारो की प्रस्तुतियाँ एवं रागांग
- रागांग वर्गीकरण मे आधुनिक तंत्र (सॉफ्टवेर) के प्रयोग की संभावनाएँ
- संगीत शिक्षा मे रागांग का महत्त्व और रागांग आधारित रियाज पर नव विचार
- हिन्दूस्तानी एवं कर्नाटकी संगीत मे रागांग प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन
- राग के गायन समय, स्वर लगाव एवं रागांग के परस्पर संबंधो का विश्लेषणात्मक अध्ययन

इस प्रकार भविष्य की कई शोध संभावनाएँ प्रस्तुत शोध प्रबंध के आधार पर हो सकती है; ऐसा शोधार्थी का मानना है ।

राग को समझने के लिए तालिम एवं आजीवन रियाज का कोई पर्याय नही है । रागांग वाचक स्वर संगतियो से राग रूपी देवता की मूर्ति का निर्माण संभव है । शोधार्थी का मत है कि "राग" के अध्ययन के लिए रागांग का अध्ययन एक महत्वपूर्ण घटक है । साथ ही "राग" को आत्मसात करने के लिए अन्य कई प्रक्रियाओ जैसे तालिम, रियाज, शास्त्रो का अभ्यास, विभिन्न प्रस्तुतियो का श्रवण, राग का मनन चिंतन और स्वयं राग मय होना भी अत्यंत अनिवार्य है । इसलिए संगीत साधना यह एक निरंतर प्रक्रिया है ।